रिकॉर्डः– माता ओ माता..... ''ऊँ'' पिताश्री 18/8/1965

ओम शान्ति। यह है माताओं की महिमा। तुम सब माताएँ हो। भारत माता शक्ति अवतार ऐसे कहा जाता है; क्योंकि अवतार तो एक का ही गाया जाता है। परमात्मा कब अवतरते हैं, क्या करने? पतितों को पावन बनाने। ऊँच ते ऊँच भगवान पतित–पावन हुआ। अभी तुम बच्चों की बुद्धि में है कि प०पि०प० हमको पावन बनाने लिए आए हुए हैं। ब्रह्मा के तन में भी है। यह जो दिलवाला मंदिर है, यह तो पूरा यादगार है। जो भी भक्तिमार्ग में यादगार है। यादगार होते ही संगमयुग के हैं। सतयुग–त्रेता में तो ऐसी बात होती नहीं। फिर रावण राज्य में मनुष्य दुखी होते हैं। रावण ही रजो–तमो बनाते हैं। अब इस समय सृष्टि है तमोप्रधान। जब यह सृष्टि सतोप्रधान थी तो तुम बच्चे वहाँ राज्य करते थे। तुम्हारी बुद्धि में यह स्वदर्शनचक्र है। तुम ब्राह्मण ही स्वदर्शनचक्रधारी हो। ज्ञान देने वाला एक ही ज्ञान का सागर है। (उनकी निशानी) दिलवाला मंदिर और फिर अचलघर भी है। उसमें गुरुशिखर भी है। तुमको मालूम है, शिखर पहाड़ी को कहा जाता है। पहाड़ी पर शिव का मंदिर है, जिसके लिए कहा जाता है ज्ञान अंजन... ज्ञान का सागर हुआ ना। यह बिल्कुल एक्युरेट यादगार है। तुम बैठे भी यहाँ ही हो, चोटी पर चढ़ने लिए, प०पि०प० की रुद्रमाला बनने लिए। तुमको यहाँ ज्ञान मिलता है, फिर तुम जब अचल, स्थीरियम बनते हो तो तुम जाकर रुद्रमाला बनते हो। जब तुम सतोप्रधान बन जाते हो तब बाप के साथ निवास करते हो। यह जैसे डबल पिअर घर है। प्रजापिता ब्रह्मा का भी है और शिवबाबा भी यहाँ आया है तुम बच्चों को ज्ञान श्रृंगार कराने। यह है बेहद का पिअर घर। वो ससुर घर। अभी पिअर घर से तुम बेहद की कमाई कर रहे हो। जानते हो वह पिअर, ससुर घर तो हद के होते हैं। ससुर घर जाए जेवर आदि पहनते हैं। सुख समझते हैं। तुम अभी समझ गए हो, हम बेहद बाप के घर में बैठे हैं। बेहद ससुर घर जाने लिए अविनाशी ज्ञान रत्नों की धारणा कर रहे हैं। 21 जन्मों लिए तुम्हारी झोली भर रहे हैं; परन्तु तीव्र वेगी इतने नहीं हैं। सतोप्रधान को तीव्र वेगी कहा जाता। कोई रजोगुणी, कोई तमोगुणी हैं। 3 प्रकार के पुरुषार्थी होते हैं। बनना तो है ऊँच ते ऊँच पुरुषार्थी। बुद्धि में बाप की ही याद रखनी है। ऊँच ते ऊँच है वो बाप। अभी तुम बच्चे जानते हो, हम बेहद ससुरघर में बेहद सुख में जाते हैं। तो पुरुषार्थ भी बहुत अच्छा करना पड़े बेहद का। आत्मा कहती है मैं आयरन एज में आ गई हूँ। अब प०पि०प० मिला है। कहते हैं– बच्चे, तुमको यहाँ पुरुषार्थ कर गोल्डन एज को पाना है। जब ऐसी अवस्था हो जावेगी तब गोल्डन एज में आवेंगे। तमोप्रधान से फिर सतोप्रधान बनना है। सतोप्रधान भी सबको बनना है। तुम्हारा तो पार्ट ही सतयुग में है। इसलिए तुम सतोप्रधान बनते हो; परन्तु जाना तो सबको है ना। सबको नम्बरवार रुद्रमाला बनना है। पहले–2 हम माला में सूर्यवंशी, फिर चंद्रवंशी, यह माला कितनी बड़ी है। 8 रत्नों की भी माला है। 108 की भी माला है। तुम समझ गए हो रुद्रमाला कैसे बनी हुई है। कैसे फिर नम्बरवार आने वाले हैं। तुम्हारी यादगार का एक्युरेट मंदिर बना हुआ है। नीचे तपस्या में बैठे हुए है, ऊपर में राजाई और जगदम्बा का भी मुख्य नाम है। पार्ट तो तुम माताओं का है ना। बाप आए गुरु पद तुम माताओं को देते हैं। मंदिरों में भी मैजॉरिटी माताओं की है; इसलिए भारत माता शक्ति अवतार गाया जाता है। सेना भी कहा जाता; क्योंकि आपस में बहुत हैं ना। तुम देखते हो, वृद्धि को पाते रहते हैं। सन्यासी तो तुम्हारी हमजिन्स (को) विधवा बना देते। घरबार छोड़ा है पवित्र बनने लिए। रावण राज्य शुरू होता है तो पवित्रता की जरूरत रहती है। उस समय हाहाकार हो जाता है। अर्थक्वेक आदि भी होते हैं। नहीं तो वैकुण्ठ कहाँ गया? कहते हैं सोनी द्वारिका समुद्र के नीचे चली गई। ज़रूर अर्थक्वेक हुआ होगा। इतने सब महल आदि कहाँ गए? सब विनाश को पाते हैं। यह सब सागर में चले जावेंगे। यह सृष्टिचक्र कैसे फिरता है, यह समझने की बात है। आयरन एज से फिर गोल्डन एज में जाना है। स्वर्ग है तुम्हारा बेहद का ससुर घर, जिसके लिए तुम पुरुषार्थ करते हो। पूरा ज्ञान हो, पूरा पुरुषार्थ करे तब खुशी का पारा चढ़े। अति इन्द्रिय सुख अंत का गाया हुआ है।

पिछाड़ी में तुमको पता पड़ जावेगा, किस–2 ने कितना–2 पुरुषार्थ किया, क्या पद पावेंगे। पिछाड़ी में सम(झेंगे) जब तुम पुरुषार्थ कर गोल्डन एज तक पहुँच जावेंगे। जो ना पहुँचते हैं तो फिर सज़ा खानी पड़ती है। अभी तो कयामत का समय है। सबको हिसाब–किताब चुक्तू कर जाना है। तुम चुक्तू करते रहते हो ज्ञान और योग से। गाया भी जाता है चढ़े तो... गिरे तो चकनाचूर; क्योंकि विकार में गिर पड़ते हैं। देह–अभिमान आने बाद ही विकार में गिरते हैं। फिर चढ़ ना सके। चढ़ते हैं फिर गिर पड़ते हैं। टाइम तो लगेगा ना। ऐसा हो नहीं सकता सीधा चलता जाए। थोड़ी भी अच्छी अवस्था होती है फिर तूफान आ जाता है। महसूसता आती है कोई ग्रहचारी है। मंसा तूफान आदि बहुत आते हैं। ऊँच चढ़ने में टाइम लगता है। बाबा रोज़ समझाते रहते हैं– बच्चे, तुम पढ़ाई रोज़ पढ़ो। प्वाइंट्स दिन–प्रतिदिन बहुत मिलती रहती हैं। बाप और वर्से को याद करो। अभी यह टाइम पूरा होता है। हमको फिर से वर्सा लेना है। सतयुग में राजा–रानी, प्रजा सब होंगे। जैसा–2 कर्म जो पुरुषार्थ करेंगे वैसा फल मिलेगा। ल०ना० से ही राज्य शुरू होगा। वो होता है विकर्माजीत संवत। विकर्मों पर जीत पहन कर तुम अपना राज्य–भाग्य लेते हो। पुरुषार्थ अनुसार नम्बरवार पद पावेंगे। हरेक अपने पुरुषार्थ की रिज़ल्ट को देखते चलो, हम कितना पुरुषार्थ करते हैं। तमोप्रधान से सतोप्रधान में जाना है। आत्मा कहती है मुझे पुरुषार्थ करके सूर्यवंशी राजाई पानी है। हम तो पूरा पढ़ कर बाप को पूरा याद करेंगे। तुमको अभी सारे ज्ञान की रोशनी मिलती है, भविष्य में तुम क्या बनेंगे। बहुत बच्चे गफलत में रहने कारण भूल जाते हैं। अवज्ञा भी करते रहते हैं। बेहद के बाप की निंदा करने निमित्त बन पड़ते हैं। क्रोध होने से भी कितना नुकसान कर देते हैं। सब समझ जाते हैं इनमें क्रोध का भूत है। इसलिए कामी से भी, क्रोधी से भी दूर रहना चाहिए। उनका संग ना करना चाहिए। संग उनका हो जो ज्ञान की टिकल–2 करते रहे। ऐसे नहीं जो झरमुई–झगमुई किसकी निन्दा करे, उसका संग ना होना चाहिए। सिवाय ज्ञान की कोई बात ना सुननी चाहिए। यह बातें भी नामीग्रामी हैं। धूतियों ने सीता को राम से जुदाई दे दी। धूतीपना बड़ा नुकसान कर देता है। हियर नो ईविल... उल्टी–सुल्टी बातें करने वाले के संग में कब ना फँसना। बहुत नुकसान कर देते हैं। बेहद के बाप से भी बुद्धियोग तुड़ा देते हैं। राम–सीता फेल हुए ना; क्योंकि पूरा योग ना रखा तो गिर पड़े। बाकी ऐसे नहीं कि रामराज्य में कोई सीता को चुरा ले गया। नहीं। यह सब गिरावट की बातें हैं। भक्तिमार्ग है ही गिरावट लिए। भक्ति यानी दुर्गति, ज्ञानी यानी सद्गति। सतयुग–त्रेता में तो भक्ति होती नहीं। पीछे भक्तिमार्ग शुरू होता है। याद करते हैं– हे पतित–पावन, आओ। द्वापर से लेकर यह पुकार करते आते हैं; क्योंकि गिरते हैं। भक्ति से दुर्गति होती है, तब तो भगवान को आना पड़ता है। अगर सद्गति होती तो भगवान के आने की दरकार नहीं रहती। सतयुग–त्रेता में सद्गति है। कोई भी भगवान को याद नहीं करते। कोई बुलाते ही नहीं। भक्तिमार्ग है दुर्गति मार्ग। यह भी समझाया है पहले सतोप्रधान भक्ति, फिर तमोप्रधान भक्ति होती है ड्रामा अनुसार। ड्रामा के राज़ को, चढ़ती कला, उतरती कला को कोई जानते ही नहीं हैं। बाप सन्मुख बैठ समझाते हैं, सारी दुनिया को तो पढ़ना ना है। पढ़ेंगे वो ही जो कल्प पहले पढ़े हैं। बाप सावधान करते रहते हैं। इस पढ़ाई से तुम्हारी आत्मा को पता पड़ा है कि हम कितने ऊँच थे। अब गिरे हैं। अब बाप कहते हैं पतित से पावन बन फिर गोल्डन एज में जाना है। याद के बल से एवर हेल्दी, ज्ञान के बल से एवर वेल्दी बनना है। पवित्रता का ऑर्डिनेन्स निकाला है। पवित्र बनने से ही तुम अमर पद को पाते हो। तुम्हारा विनाश नहीं है। बाकी सब विनाश हो जाते। हिसाब–किताब चुक्तू कर जावेंगे। शिवबाबा कहते हैं, पवित्र बनो तो पवित्र दुनिया के मालिक बनेंगे। नहीं तो फिर सज़ा खाकर जावेंगे। कितना बड़ा ऑर्डिनेन्स है। तुम समझते भी हो, बरोबर विनाश सामने खड़ा है। इनसे पहले हमको मजबूत हो जाना है। किसम–2 की प्वाइंट्स बाबा सुनाते रहते हैं। सुननी

चाहिए। अगर सुनेंगे नहीं तो हम माला में जा ना सकेंगे। माला में भी नम्बरवन जाना चाहिए। बाप से पूरा वर्सा लेना चाहिए। अच्छे स्टूडेंट पढ़ाई में अच्छी रीति लग पड़ते हैं। बाबा रजिस्टर भी मँगाते हैं। बाबा सबको खबरदार करते हैं। पढ़ना ज़रूर है। इसमें कोई कारण दे नहीं सकते। टाइम तो बच्चों को बहुत है। 8 घण्टा भल गवर्मेन्ट की नौकरी करो। बाकी टाइम में मेहनत करनी है। ख्याल करना चाहिए सारे दिन में हम कितना बाप की सर्विस में रहा, बाबा की याद में कितना समय रहा। कोई–2 बच्चों का चार्ट आता है; परन्तु वो चार्ट जब सदैव के लिए रहे। ऐसे नहीं बाबा एक–2 का बैठ देखेंगे। यह फिर सेन्टर की ब्राह्मणी का काम है। ब्राह्मणियों में भी नम्बरवार तो हैं। गोल्डन एज में तो कोई पहुँचे नहीं हैं। उसमें अजन समय पड़ा हुआ है। कोई तो और ही जास्ती आयरन एज में चले गए हैं। श्रीमत पर ना चलने कारण थिरक पड़ते हैं। फिर उनको कोई मान भी नहीं देते हैं। कोई भी उनको अपने पास पसंद नहीं करते हैं। तुम बच्चों को तो कोई भी दुनियावी बात ना करनी है। कोई झरमुई–झगमुई सुनावे तो समझो यह हमारा दुश्मन है। यह हमको गिराने वाले हैं। फालतू बातें ना करनी हैं। मम्मा सूक्ष्मवतन में सर्विस कर रही है। इनके लिए तुमको कुछ करना नहीं है। अपन को देखना है हम कहाँ तक पहुँचे हैं। गुरुशिखर है। इसमें भी बहुत ज्ञान भरा हुआ है। तुमको तो ऊपर जाना है गुरुशिखर पर। यह सब ज्ञान की बातें हैं। पहाड़ आदि की कोई बात नहीं। सबसे पार चले जाना है। इन बातों को कोई जानते नहीं हैं। बाप कहते हैं तुम तमोप्रधान बन गए हैं। अब फिर सतोप्रधान बनना है। बहुत हैं जिनको यह भी निश्चय नहीं है कि हमको बाबा पढ़ाते हैं। भल सेन्टर्स पर कुछ ना कुछ वार्तालाप भी करते हैं; परन्तु अन्दर वो निश्चय अभी तक नहीं हुआ है। पूरा योग नहीं है। दूसरों को समझाते हैं तो उनका कल्याण हो जाता है। ऐसे नहीं कि वो कल्याण करती है। नहीं। वो तो अपने भाग्य अनुसार राज़ को समझ लेते हैं। ऐसे भी बहुत हैं जो ब्राह्मणी से भी तीखे चले जाते हैं। देह–अभिमान बहुत आ जाता है। पिछाड़ी में देह भी याद ना रहे। सन्यासियों में भी कोई विरले होते हैं जो ऐसे बैठे–2 शरीर छोड़ते हैं और सन्नाटा हो जाता है। फिर भी गृहस्थियों पास जन्म लेना पड़ता है। भ्रष्टाचारी फिर श्रेष्टाचारी बनने जंगल में जाते हैं। माया का राज्य है ना। यह चक्कर कैसे फिरता है। इनको भी समझा है। बहुत बच्चियाँ हैं कब देखा ना है तो भी याद करते रहते हैं। तो ऊँच पद मिल जाता है। सारा कर्म का खेल है ना। कोई तो रात–दिन बहुत मेहनत करते हैं। तुम जानते हो, इस देह में रहते पतित से पावन, सतोप्रधान बनना है। टाइम लगता है पावन बनने में। जब तक यह दुनिया है, यह पढ़ाई है, तब तक पढ़ना है। जां जीना है पढ़ना है, ताकि कर्मातीत अवस्था में चले जाएँ। इस देह से, दुनिया से बिल्कुल ममत्व निकल जाए। मेहनत है ना। राजा–रानी बनने में मेहनत है। जो अच्छी तरह पढ़ते हैं कायदे अनुसार वो ही दिल रूपी तख्त पर चढ़ते हैं। अन्दर में समझते हैं यह कहाँ तक मददगार है जो तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने पुरुषार्थ करते हैं। यह समझ की बात है। बेहद का बाप भी अवस्था देख प्यार करेंगे ना। बाप समझाते हैं अपना कल्याण करने चाहते हो तो श्रीमत पर चलो। पढ़ाई पर अटेंशन दो। ऐसा काम ना करो जिससे दूसरों को नफरत आए। क्रोध वाले को कब मान ना देंगे। फिर भी बाबा पुरुषार्थ कराते रहेंगे। (बॉक्सिंग) है ना। वो तो है हद की लड़ाई। तुमको इस युद्ध के मैदान में कितना समय लगा है। बाप कहते हैं, आत्मा तमो से अब रजो में आए हो नम्बरवार। सतो में कोई मुश्किल पहुँचे हैं। अजन टाइम पड़ा है। अति इन्द्रिय सुख गोप–गोपियों से पूछो। वो पिछाड़ी की अवस्था है। गुरुशिखर भी पिछाड़ी में आवेगा। जब तुम बिल्कुल सतोप्रधान अवस्था में होंगे, जब तुम्हारी अचल, स्थीरियम अवस्था हो जाती है तब तुम अटल, अखण्ड स्वराज्य पाते हो।

पुरुषार्थ

कराने वाला बाप भी मिला है। समझाते तो बहुत हैं। यहाँ तुमको रोशनी मिलती है। बुद्धि में बैठता है, कैसे हमको ऊँच पद पाना है। इस जन्म को बहुत वैल्युएबुल कहा जाता है। यह है अमूल्य जीवन। कौड़ी से हीरे जैसे बनना पड़ता है, तब तुम पिअर घर से ससुर घर में चले जावेंगे नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। पुरुषार्थ कर जितना ऊँच पद पाना है सो यहाँ ही पता पड़ जावेगा। बाबा कहते हैं, तुम घर–2 में कॉलेज अथवा हॉस्पिटल बना सकते हो। फिर आहस्ते–2 वृद्धि को पाते रहेंगे। एवर हेल्दी और वेल्दी बनेंगे। कॉलेज और हॉस्पिटल यह हैं। दो हैं मुख्य। कॉलेज में पढ़ते हैं आमदनी के लिए और हॉस्पिटल है निरोगी बनने लिए। योग और ज्ञान, और फिर चक्कर भी फिराना पड़े। सारी बुद्धि की बात है, जितना जो करे। टाइम तो बहुत है। फिर भी पुरुषार्थ करते 2, 4 घण्टा तक पहुँचना है। एक घड़ी, आधी घड़ी बढ़ाते रहो। पिछाड़ी में वो अवस्था आ जावेंगे जो सिवाय ज्ञान के और कोई बात बुद्धि में आवेगी नहीं। गृहस्थ व्यवहार में रहते उस अवस्था को पाने का पुरुषार्थ करना है। छोड़ने की तो बाबा बात कहते नहीं। कहाँ भी मूँझ हो तो पूछना है। बाबा हर एक के सरकमस्टांस देख बतलाते रहते हैं। हरेक की बीमारी अपनी है। किसम–2 के विघ्न आते हैं। उनसे पार होना है। विघ्न डालने वालों को कैसे–2 नाम दिए हैं। सुपर्णखा, कंस, जरासंधी आदि अनेक हैं। तुम बच्चों को अपना पुरुषार्थ करना है। पुरुषार्थ का सा० सबको होता है। कोई भी ऐसी चलन चलते हैं तो बाप की निंदा कराते हैं। वो गुरु लोग डर देते हैं– गुरु के निन्दक ठौर ना पाए। यह तो बाप, टीचर, सत्गुरु तीनों ही हैं। कहते हैं, हमारी निन्दा करेंगे, सतोप्रधान ना बनेंगे तो ठौर कैसे पावेंगे। यह सब समझने की बातें हैं। बाप का यज्ञ है। मंसा–वाचा–कर्मणा शरीर को हवन करना है सर्विस में। हवन तो सब होंगे। आहूती पड़नी है। तन–मन भी आहुती बाप को देनी है, तब तुमको इतना ऊँच पद मिलता है। बच्चों को रोज़ भिन्न–2 गुह्य प्वाइंट्स तो समझाते रहते हैं, जिससे पुरुषार्थ में हिम्मत आ जाए। स्वर्ग के मालिक बनते हो। कम पद थोड़े ही है; परन्तु पढ़ाने वाले को ही भूल जाते हैं।

तूफान तो बहुत आवेंगे। यह भी अपना अनुभव बतलाते हैं, तूफान आते हैं, फिर पुरुषार्थ करता हूँ। सदैव स्थीरियम हर्षित रहूँ। बाबा की याद में रहूँ। पुरुषार्थ करना है। हार्टफेल नहीं होना है। ऐसे बहुत ठंडे पड़ जाते हैं। रेस में देखते हैं, हमारी ताकत नहीं है तो फिर ठण्डे पड़ जाते हैं। कोई तो वापिस घर भी चले जाते हैं। ऐसा ना बनना चाहिए। तुम बच्चों को रोशनी ही रोशनी है। नॉलेज बड़ी सिम्पल है। बाप ही आए पतित से पावन बनने का ज्ञान देते हैं। अब वापिस चलना है। संगम का सच्चा–2 मेला यह है। बाकी वो तो सब भक्तिमार्ग के धक्के हैं। कितने धक्के खाते हैं। कितना भक्तों ने भक्ति में फँसा रखा है। इनसे अपन को छुड़ा नहीं सकते हैं। सबका सद्गति दाता एक ही है। बाकी सब दुर्गति में ले जाते हैं। इसलिए कहते हैं, इन गुरु–गोसाईं आदि सबको छोड़ो। माम् एकम् याद करो। अच्छा, मीठे–2, ज्ञान और योग के पुरुषार्थी बच्चों प्रति मात–पिता, बापदादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग। बापदादा का डायरैक्शन कन्याएँ और माताएँ जो सर्विसएबुल हैं उन्हों का अगर सेमीनार मधुबन में 15 सितम्बर से 30 तक किया जाए, कौन–2 आ सकते हैं, फौरन समाचार देना है और अगर जिस्मानी सर्विस में कन्याएँ हैं तो छुट्टी मिल सकती है? बिगर पे (बिगर तनख्वाह) 15 रोज़ लिए। ऐसा समाचार बाबा पास फौरन आना है। जो आने तैयार हो सो अपना नाम भी लिख भेजें। फिर जिनको मँगाना होगा उनको निमंत्रण दिया जाएगा। अच्छा, मधुबन स्वर्ग आश्रम से बापदादा और सर्व मधुबन निवासियों का याद स्वीकार हो।